

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN, PATIALA

भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

www.khetiduniyan.in



All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

• Issue Dated 27-07-2024 • Vol. 8 No. 30 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

किसानों को सलाह – दवाओं व खादों के गैर-जरूरी प्रयोग से नुकसान न करवाएं

धान के पौधे को हिलाने पर 5 टिक्के पानी में तैरते दिखें तो सिफारिशी कीटनाशी का करें छिड़काव

फसलों का रंग हरा करने और पैदावार में बढ़ोत्तरी करने की दौड़ में फसलों में इस्तेमाल की जाने वाली अनावश्यक खादों और दवाओं से दोहरा नुकसान हो रहा है। इन जहरों के बेतहाशा प्रयोग से जहाँ इन फसलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है, वही खेती खर्च भी बढ़ जाता है। पैदावार में ज़हरीले तत्व भी बढ़ जाते हैं। खास तौर पर धान और बासमती की फसल में किसान फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए यूरिया खाद का अंधाधुंध प्रयोग करते हैं। धान के टिक्के जुलाई से अक्तूबर तक पौधों का रस चूसते हैं। इनकी रोकथाम के लिए नाइट्रोजन वाली खादों का प्रयोग जरूरत के मुताबिक ही करना चाहिए। खेत में पौधा हिलाने के बाद प्रति पौधा 5 या अधिक



टिक्के पानी पर तैरते दिखाई दें, तो कीटनाशक

भूंडी का हमला भी देखने को मिलता है,

का छिड़काव करना चाहिए। धान पर कंडियाली

जिसकी रोकथाम के लिए खेत का निरीक्षण

करते रहना चाहिए। जरूरत पड़ने पर सिफारिशी कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए।

कृषि और किसान भलाई विभाग के डायरेक्टर डॉ. जसवंत सिंह का कहना है कि यदि किसी भी खेत में किसानों को कोई समस्या नज़र आती है, तो वे खाद विक्रेता के कहने पर किसी दवा का छिड़काव करने की बजाय पहले खेती माहिरों से सम्पर्क करें, जिससे सही समय पर सही दवा का छिड़काव कर समस्या का निवारण किया जा सके और अधिक खर्च से भी बचाव हो सके। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि बासमती की फसल पर प्रतिबंधित दवाओं का बिल्कुल भी प्रयोग नहीं किया जाए।

खरीफ फसलों की बुवाई बढ़ी, धान के रकबा में हल्की गिरावट

अरहर, मूँग, सोयाबीन, मूँगफली, मक्का जैसी प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई में इजाफा। बाजरा, उड़द, तिल, कपास का रकबा घटा।

खरीफ फसलों की बुवाई में बढ़ोत्तरी दर्ज की जा रही है। चालू सीजन में अब तक खरीफ फसलों की बुवाई 800 लाख हैक्टेयर को पार कर गई है। दलहन, तिलहन, मोटे अनाज की बुवाई में इजाफा हुआ है। हालांकि इस सीजन की सबसे बड़ी फसल धान की बुवाई में हल्की गिरावट देखी जा रही है। अब तक 215.97 लाख हैक्टेयर में

2.29 फीसदी बढ़ा है।

कितना रहा दलहन फसलों का रकबा?

चालू खरीफ सीजन में 26 जुलाई तक दलहनी फसलों का रकबा 102.03 लाख हैक्टेयर दर्ज किया गया, जो पिछली समान अवधि के रकबा 89.41 लाख हैक्टेयर से अधिक है। अरहर की बुवाई पिछले साल के 28.73 लाख हैक्टेयर से बढ़कर

121.73 लाख हैक्टेयर दर्ज किया गया, पिछली समान अवधि में यह आंकड़ा 116.99 लाख हैक्टेयर था। इस सीजन में मूँगफली का रकबा पिछले साल के 36.08 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 41.03 लाख हैक्टेयर हो गया। तिल का रकबा पिछले साल के 8.94 लाख हैक्टेयर से घटकर 7.32 लाख हैक्टेयर रह गया।



धान बोया जा चुका है, जो पिछले सीजन की समान अवधि में 216.39 लाख हैक्टेयर में बोये गए धान से थोड़ा कम है। इस साल कपास की बुवाई 6.87 फीसदी घटकर 105.73 लाख हैक्टेयर रह गई।

2024 में कितनी हुई खरीफ फसलों की बुवाई?

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के आंकड़ों के अनुसार 26 जुलाई तक 811.87 लाख हैक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई हो चुकी है। पिछले साल की समान अवधि में यह आंकड़ा 793.63 लाख हैक्टेयर था। इस तरह चालू खरीफ सीजन में अब तक खरीफ फसलों का रकबा

38.53 लाख हैक्टेयर और मूँग की 27.01 लाख हैक्टेयर से बढ़कर

30.37 लाख हैक्टेयर हो गई, जबकि उड़द की बुवाई पिछले साल के 23.86 लाख हैक्टेयर से घटकर 23.12 लाख हैक्टेयर रह गई।

तिलहन फसलों की बुवाई में कितना हुआ इजाफा?

देश में अब तक 171.67 लाख हैक्टेयर में तिलहन फसलें बोई जा चुकी हैं, जो पिछले साल इसी अवधि में 165.37 लाख हैक्टेयर में बोई गई थीं। इस दौरान इस सीजन की सबसे बड़ी तिलहन फसल सोयाबीन का रकबा

मोटे अनाजों की कितनी हुई बुवाई?

सरकारी आंकड़ों के अनुसार

26 जुलाई तक मोटे अनाजों की 153.10 लाख हैक्टेयर में बुवाई हो चुकी है, जो पिछले साल की समान अवधि में 145.76 लाख हैक्टेयर में हुई बुवाई से 5 फीसदी ज्यादा है।

मोटे अनाजों में मक्का का रकबा 13.61 फीसदी बढ़कर 78.80 लाख हैक्टेयर हो गया। हालांकि इस साल मोटे अनाजों में मक्का के बाद दूसरी

बड़ी फसल बाजरा की बुवाई 6.83 फीसदी घटकर 56.46 लाख हैक्टेयर रह गई।



पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा सितम्बर माह में लगाए जा रहे

किसान मेले

नागकलां (अमृतसर) 3 सितम्बर

बल्लोवाल सौंखड़ी 6 सितम्बर

फरीदकोट 10 सितम्बर

गुरदासपुर 18 सितम्बर

रौणी (पटियाला) 24 सितम्बर

बठिण्डा 27 सितम्बर

पी.ए.यू. कैम्पस, लुधियाना 13 से 14 सितम्बर

कृषि मानव सभ्यता की आधारशिला है, जो दैनिक जीवन के लिए आवश्यक भोजन, फाइबर और ईंधन प्रदान करती है। हालांकि, जैसे—जैसे जलवायु परिवर्तन में तेज़ी आती है, इस क्षेत्र को अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो इसकी उत्पादकता और इसकी स्थिरता दोनों को खतरे में डालती है। यह लेख बताता है कि जलवायु परिवर्तन कृषि को कैसे प्रभावित करता है, इन प्रभावों को कम करने के लिए वर्तमान रणनीतियां और एक लचीले कृषि भविष्य को सुरक्षित करने के लिए विकसित किए जा रहे नवीन समाधान।



जलवायु परिवर्तन को समझना

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य वैश्विक जलवायु में महत्वपूर्ण, दीर्घकालिक परिवर्तनों से है। यह वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (जी.एच.जी.), मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4) और नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) में वृद्धि के परिणामस्वरूप हाता है। ये गैसें सूर्य की गर्मी को सोख लेती हैं, जिससे पृथ्वी की सतह गर्म हो जाती है। यह वार्मिंग, वर्षा के पैटर्न में बदलाव और चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति जैसे अन्य परिवर्तनों के साथ मिलकर, कृषि सहित समाज के सभी क्षेत्रों के लिए दूरगामी परिणाम देती है।

कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

1. तापमान वृद्धि : जलवायु परिवर्तन के सबसे प्रत्यक्ष प्रभावों में से एक औसत तापमान में वृद्धि है। इष्टतम विकास और उत्पादकता के लिए फसलों और पशुधन में विशिष्ट

कृषि और जलवायु परिवर्तन

एक सतत विश्व के लिए भविष्य का मार्ग प्रशर्त करना

जगदीप सिंह, महर्षि मकांदेश्वर विश्वविद्यालय, मुलाना (हरियाणा)

मंजू, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

ललिता पंवार, चावल अनुसंधान केन्द्र, कौल, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लगातार और गंभीर होती जा रही है। ये घटनाएं फसलों और पशुधन को तत्काल नुकसान पहुंचा सकती हैं और रोपण कार्यक्रम को बाधित करने और बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा कर कृषि प्रणालियों पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती हैं।

4. कीट एवं रोग का दबाव : गर्म तापमान और बदलते मौसम के पैटर्न कीटों और बीमारियों के वितरण को बदल सकते हैं। नए कीट और बीमारियां उभर सकती हैं और मौजूदा कीट और अधिक आक्रामक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए अफ्रीका में फॉल आर्मीर्वम के

बीमारी के प्रति अधिक प्रतिरोधी हों, एक मौलिक अनुकूलन रणनीति है। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक किसानों को बदलती परिस्थितियों से निपटने में मदद करने के लिए गर्मी प्रतिरोधी चावल की किस्में और सूखा-सहिष्णु मक्का संकर विकसित कर रहे हैं।

2. कुशल जल प्रबंधन : कुशल जल प्रबंधन प्रथाएं किसानों को सूखे और बाढ़ दोनों से निपटने में मदद कर सकती हैं। पानी के उपयोग को अनुकूलित करने और अपशिष्ट को कम करने के लिए डिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और सिंचाई शेड्यूलिंग के लिए मौसम पूर्वानुमान का उपयोग जैसी तकनीकों आवश्यक है।

3. मृदा संरक्षण तकनीकें : बिना जुताई वाली खेती, ढकी हुई फसल और समोच्च जुताई जैसी तकनीकें मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने और कटाव को रोकने में मदद करती हैं। मिट्टी की संरचना को बढ़ाती है, नमी बनाए रखती है और कार्बनिक पदार्थ बढ़ाती है, जिससे फसल की पैदावार और जलवायु प्रभावों के प्रति लचीलापन में सुधार हो सकता है।

4. विविधीकरण : फसलों और कृषि प्रणालियों में विविधता लाने से जोखिम फैल सकता है और लचीलापन बढ़ सकता है। विभिन्न प्रकार की फसलें उगाकर और पशुधन को एकीकृत करके, किसान अपनी समग्र उत्पादकता पर कीटों, बीमारियों और जलवायु में उत्तर-चढ़ाव के प्रभाव को कम कर सकते हैं।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

कृषि के लिए अनुकूलन रणनीतियां

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए, किसानों और कृषि पेशेवरों को कई अनुकूलन रणनीतियों को अपनाना होगा। ये रणनीतियां कृषि को जलवायु परिवर्तन के वर्तमान प्रभावों से निपटने और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।

1. उन्नत फसल किस्में : ऐसी फसल किस्मों का विकास और रोपण करना जो गर्मी, सूखे और तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं

तापमान सीमाएं होती हैं। बढ़ते तापमान से गर्मी का तनाव, फसल की पैदावार में कमी और कम गुणवत्ता वाली उपज हो सकती है। उदाहरण के लिए, ग्लोबल वार्मिंग के 1.5 डिग्री सैलिंग्स से ऊपर तापमान में प्रत्येक 1 डिग्री सैलिंग्स वृद्धि पर गेहूं और मक्के की पैदावार में 10 प्रतिशत तक की गिरावट का अनुमान है।

2. वर्षा पैटर्न में परिवर्तन : जलवायु परिवर्तन वर्षा के पैटर्न को भी प्रभावित करता है, जिससे सूखा और बाढ़ दोनों आते हैं। सूखे से सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता कम हो जाती है और फसलें बर्बाद हो सकती हैं, जबकि बाढ़ से फसलों को नुकसान हो सकता है और मिट्टी का क्षरण हो सकता है। जिन क्षेत्रों में कभी पूर्वानुमानित वर्षा होती थी, उनमें बदलाव आ सकता है, जिससे किसानों के लिए अपनी गतिविधियों की योजना बनाना और उनका प्रबंधन करना कठिन हो जाएगा।

3. चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ी हुई आवृत्ति : तूफान, लू और तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं

तापमान सीमाएं होती हैं। बढ़ते तापमान से गर्मी का तनाव, फसल की पैदावार में कमी और कम गुणवत्ता वाली उपज हो सकती है। उदाहरण के लिए, ग्लोबल वार्मिंग के 1.5 डिग्री सैलिंग्स से ऊपर तापमान में प्रत्येक 1 डिग्री सैलिंग्स वृद्धि पर गेहूं और मक्के की पैदावार में 10 प्रतिशत तक की गिरावट का अनुमान है।

4. विविधीकरण : फसलों और कृषि प्रणालियों में विविधता लाने से जोखिम फैल सकता है और लचीलापन बढ़ सकता है। विभिन्न प्रकार की फसलें उगाकर और पशुधन को एकीकृत करके, किसान अपनी समग्र उत्पादकता पर कीटों, बीमारियों और जलवायु में उत्तर-चढ़ाव के प्रभाव को कम कर सकते हैं।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

5. जलवायु-स्मार्ट कृषि : जलवायु-स्मार्ट कृषि (सी.एस.ए.) एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करना है: उत्पादकता बढ़ाना, लचीलापन बढ़ाना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना सी.एस.ए. प्रथाओं में बेहतर फसल और पशुधन प्रबंधन, कृषि वानिकी और संरक्षण कृषि शामिल है।

डॉ. नेहा चौहान, डॉ. पंकज सूद,
डॉ. शकुंतला राही, रंजना ठाकुर,
कृषि विज्ञान केन्द्र, मंडी स्थित
सुंदरनगर (हिमाचल प्रदेश)

जल मानव जाति के लिए उपलब्ध सबसे अपरिहार्य प्राकृतिक संसाधन है। ग्रह के सभी नवीकरणीय संसाधनों में से पानी का एक अद्वितीय स्थान है। यह जीवन के सभी रूपों, खाद्य उत्पादन, आर्थिक विकास और सामान्य कल्याण को बनाए रखने के लिए आवश्यक है और यह वास्तव में प्रकृति की ओर से मानव जाति के लिए एक अनृता उपहार है। जल प्राकृतिक संसाधनों में सबसे अधिक प्रबंधनीय है, क्योंकि यह विचलन, परिवहन, भंडारण और पुनर्चक्रण में सक्षम है। ये सभी गुण पानी को मनुष्य के लिए इसकी महान उपयोगिता प्रदान करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न वैज्ञानिक आयोजनों में जल संसाधनों के संरक्षण और रख-रखाव की आवश्यकता पर जोर दिया गया है और इस विषय को मुख्य प्रोत्साहन मिला है।

जल संचयन एक पारम्परिक संरक्षण तकनीक है, जो पानी के संरक्षण में मदद करती है और खासकर शुक्ष और अर्ध-शुक्ष क्षेत्रों में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देती है। जल और भूमि के लिए उच्च प्रतिस्पर्धा के कारण जल संसाधनों की कमी हो गई है और इससे विश्व की खाद्य सुरक्षा को भी खतरा पैदा हो गया है। दुनिया के अधिकांश देशों में पानी की कमी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। कुल पानी की खपत का 75 प्रतिशत से अधिक हिस्सा कृषि में खर्च होता है। भूजल खनन से जल भंडार और जल युग्मवत्ता दोनों को खतरा है। ग्रामीण और



जलकुंड

छोटे और सीमांत किसानों के लिए सिंचाई जल स्रोत होने की जबरदस्त क्षमता है। वर्षा जल संचयन और कृषि में इसके विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से समस्या को कम किया जा सकता है। शुक्ष मौसम के दौरान नमी की कमी की स्थिति में फसलों को सिंचाई प्रदान करने के लिए वर्षा जल संचयन संरचनाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष वर्षा संग्रह किसानों के लिए अत्याधिक फायदेमंद हो सकता है। निक्रा परियोजना में तकनीकी विकास से वर्षा जल संचयन तकनीकों में सुधार हुआ है, जो बढ़ती आबादी के लिए भोजन की उपलब्धता की

निक्रा परियोजना में वर्षा जल संचयन संरचना

(क्लोरोपायरीफॉस 35 ई.सी. 2 जी.एस.एम. मोराई वाले सिलपॉलिन मिलीलीटर पानी) का छिड़काव करें।

* जलकुंड के किनारे से 30 सेटीमीटर की जगह छोड़ कर किनारों पर 30 सेटीमीटर चौड़ाई और 30 सेटीमीटर चौड़ाई और 30 सेटीमीटर गहराई की एक खाई खोदें।

* किनारों और तली को 250

पॉलीफिल्म से ठीक करें।

* जलकुंड के ऊपरी तरफ ढलान पर अधिमानत 30 सेटीमीटर चौड़ाई और 30 सेटीमीटर गहराई का एक जल निकासी चैनल बनाएं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि

गंदा पानी अंदर नहीं आएगा और इसी तरह अतिरिक्त पानी की सुरक्षित निकासी के लिए जलकुंड के निचले हिस्से पर एक आउटलेट चैनल बनाएं।

* जलकुंड को अवारा जानवरों से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए चारों ओर 1 से 1.5 मीटर ऊंचाई की बाड़ भी लगाई जा सकती है।

जलकुंड के फायदे :

* बरसात के मौसम में वर्षा जल को सीधे जलकुंडों में संप्रहित किया जा सकता है, जिसका उपयोग सफल खेती के लिए फसलों को सुरक्षात्मक सिंचाई प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। इससे मिट्टी का क्षरण हो सकता है और अपवाह के माध्यम से पोषक तत्वों की हानि हो सकती है।

* संग्रहित जल का उपयोग पशुधन, सूअर-पालन, मुर्गी-पालन और बत्तख पालन के लिए भी किया जा सकता है।

* संग्रहित जल में मछली पालन भी किया जा सकता है। हालांकि क्षेत्रफल के अनुसार बड़े आकार के जलकुंडों का भी निर्माण किया जा सकता है, लेकिन छोटे आकार के जलकुंडों को कम लागत की आवश्यकता होती है और रख-रखाव में आसान होते हैं। ऐसे में छोटे आकार के जलकुंडों की सिफारिश की जाती है, जो छोटे और सीमांत श्रेणी के किसानों के लिए अधिक किफायती और उपयोगी होते हैं।

आपकी फसल की सुरक्षा ... कोपल के साथ



शहरी क्षेत्रों के लिए सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता सरकार के लिए एक बड़ा मुद्दा और चुनौती बन गई है। भारत में, प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक मीठे पानी की उपलब्धता 1951 के 5177 घन मीटर से घटकर 2001 में 1820 घन मीटर हो गई है और अनुमान है कि 2025 में यह घट कर 1341 घन मीटर और 2050 में 1140 घन मीटर रह जाएगी।

कृषि में फसल उत्पादन के लिए पानी सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। शुक्ष मौसम के दौरान पर्याप्त मात्रा में पानी की अनुपलब्धता किसानों के लिए एक गंभीर समस्या बन जाती है। उपयुक्त वर्षा जल प्रबंधन स्थितियों की कमी के साथ-साथ उपयुक्त मिट्टी और जल संरक्षण उपायों की कमी के कारण विशेष रूप से मौनसून के बाद के मौसम में पानी की गंभीर कमी हो जाती है और फसल उत्पादकता भी प्रभावित होती है। इसलिए वर्षा जल संचयन में घरेलू उपयोग के साथ-साथ क्षेत्र के

जलकुंड या वर्षा संचयन संरचना के निर्माण में शामिल चरण

* जिस क्षेत्र को सिंचित करने की आवश्यकता है, उसके अनुसार आवश्यकतानुसार वांछित आकार का एक गड्ढा खोदें।

* चयनित स्थल पर गड्ढे की खुदाई मौनसून शुरू होने से पहले पूरी कर ली जानी चाहिए। अस्तर सामग्री को नुकसान से बचाने के लिए चट्टानों और पत्थरों को हटा कर कुंड के तल और स्थानों को समतल किया जाना चाहिए।

* तालाब के तल और किनारों से तेज़ किनारों वाले पत्थर और अन्य सामग्री हटा दें।

* नीचे सहित भीतरी दीवारों को उचित चिकनाई प्रदान करें और जलकुंड को 5:1 के अनुपात में चिकनाई मिट्टी को गाय के गाबर के मिश्रण से लौप कर तैयार करें।

* जलकुंड की भीतरी दीवारों की सतह और तली पर कीटनाशक



Ph. : 9592064102

www.coplgroup.org

E-mail : info@coplgroup.org

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गुरुग्राम रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 30

तिथि : 27-07-2024

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बठिंडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एकता कम्प्यूटरज़े पटियाला

हिमालय के फूलों का रंग फीका पड़ रहा है, 40 प्रतिशत खत्म हो सकते हैं

ग्लोबल वार्मिंग से हिमालय के फूलों पर खतरा मंडरा रहा है। वैज्ञानिक शोध में पता चला है कि अगले तीस सालों में पहाड़ी फूलों की 35 से 40 प्रतिशत प्रजातियाँ लुत छोड़ देंगी। फूलों का रंग भी बदल रहा है। राष्ट्रीय हिमालय पर्यावरण संस्थान के शोध में यह खुलासा हुआ है। वैज्ञानिक डॉ. संदीप रावत के अनुसार जलवायु परिवर्तन बढ़ा असर डाल रहा है। मौसम में बदलाव से कभी ज्यादा गर्मी पड़ रही है, तो कभी जरूरत से ज्यादा बारिश हो रही है। फूलों में मौसम के अचानक बदलाव को सहने की क्षमता कम होती है। ऐसे में इनके बीज अंकुरित नहीं हो पाते हैं। हम देख रहे हैं कि कुछ प्रजातियों के फूल अब समय से पहले ही खिल जाते हैं, तो कई प्रजातियों को अंकुरण के लिए अनुकूल वातावरण ही नहीं मिल पा रहा।



फूलों के परागण का समय भी बदल रहा

उत्तराखण्ड बायोटैकनोलॉजी परिषद के वैज्ञानिक डॉ. समित पुरोहित के अनुसार, फूलों पर मौसम का असर से जुड़े शोध को विज्ञान मैगजीन करने वालोंजी ने प्रकाशित किया है। इस रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण

फूलों के परागण का समय बदल रहा है। उनके रंगद्रव्य में भी रासायनिक बदलाव हो रहा है। रंगद्रव्य ही पराग्वैगनी किरणों को अवशोषित करते हैं। इससे फूलों का रंग बदल रहा है।

फूलों की घाटी पर भी असर

यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल फूलों की घाटी के फूलों पर भी असर दिख रहा है। 87.5 वर्ग किलोमीटर में फैली घाटी में 500 प्रजाति के फूल खिलते हैं। यहाँ पोटोटिला, प्राइमिला, एनिमोन, एरिसीमा, एमोनाइटस, ब्लू पोपी, मार्स मेरी गोल्ड, ब्रह्मकमल, फैन कमल जैसी प्रजातियों पर वार्मिंग का असर है।

कई प्रजातियाँ संकट में

देश में 25.47 प्रतिशत हिस्सा फूलों के अनुकूल है। पर 2050 तक इसमें करीब 10 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। देश में फूलों की 16 हजार से अधिक प्रजातियाँ हैं। हिमालयन ट्रिपेट, हिमालय ब्लू पोपी, ब्रह्म कमल, सालम पंजा सहित कई ऐसी प्रजातियाँ हैं, जिन्हें संकट की श्रेणी में रखा है।

केसर की फसल के कीड़ों, खाद्य प्रसंरकरण, विपणन, संतुलित आहार पर डाला प्रकाश

ज़िला शिविर में किसानों को तमाम जानकारियों से किया लेस

किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक और कीटनाशक उपलब्ध कराने, खरीफ फसलों के बारे में तकनीकी जानकारी देने, पर्यावरण को बचाने, कीमती पानी का बुद्धिमानी से उपयोग करने, धान की पराली नहीं जलाने, मिट्टी परीक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करने के संदर्भ में जिला स्तरीय किसान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन अतिरिक्त उपायुक्त (जे) हरकीरत कौर ने किया। इसमें पी.ए.यू. के विशेषज्ञ डॉ. मनप्रीत जेदका ने केसर की फसल के कीड़ों और डॉ. अमनदीप सिंह ने पानी व फसलों के लिए आवश्यक तत्वों के बारे में

प्रकाश डाला। प्रेरणा ठाकुर ने सब्जियों की खेती, डॉ. रमनदीप कौर ने खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन के अलावा डॉ. प्रभजोत कौर ने किसानों को संतुलित आहार एवं पशुओं में होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी। संयुक्त कृषि निदेशक नरिंदरपाल सिंह बैनीपाल ने राज्य सरकार की किसान हित में चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विभाग ने मौनसून सीज़न के दौरान सूखे के किसानों के लिए उर्वरक, कीटनाशक और बीज की व्यवस्था की है। किसी भी किसान को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करने दिया जाएगा। किसानों

को नहरी पानी और बिजली की आपूर्ति भी उपलब्ध करवाई गई है।

मोगा के 5 ब्लॉकों में 150 एकड़ में नरमे की खेती

मोगा ज़िले के मुख्य कृषि अधिकारी डॉ. जसविंदर सिंह बराड़ ने शिविर में एआर वरिष्ठ अधिकारियों, पी.ए.यू. की पूरी टीम, किसानों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि कृषि विभाग किसानों की सेवा में सदैव तत्पर है। कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुडियां के दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रत्येक किसान को उच्च गुणवत्ता की दवाएं, खाद और बीज उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध है। किसी सिंह भी मौजूद थे।

15 गायों से शुरू किया डेयरी फार्म, आज 80 गाय, लाखों का कर रहे दूध उत्पादन

खेतीबाड़ी से अधिक आमदनी देने वाला धंधा है डेयरी फार्मिंग

किसानों को रिवायती खेती के साथ-साथ सहायक धंधे अपनाने के लिए लगातार प्रेरित किया जा रहा है। प्रदेश के बहुत से किसान सहायक धंधे को अपनाकर अच्छी कमाई कर रहे हैं। मलोट के गांव अबुल खुराना के मनप्रीत सिंह ऐसे ही किसान हैं, जिन्होंने खेतीबाड़ी के दौरान रिवायती फसलों के साथ-साथ अलग से डेयरी फार्म का कार्य शुरू किया। डेयरी फार्म को पहले 15 दुधारू गायों से शुरू किया। लेकिन आज फार्म में करीब 80 गायों से लाखों का दूध उत्पादन कर रहे हैं। मनप्रीत सिंह ने बताया कि उन्होंने खेतीबाड़ी के साथ सहायक धंधे के रूप में डेयरी फार्म का कार्य अपनाया। शुरूआत में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा।

2017 में करीब 15 लाख की लागत से शुरू किया डेयरी फार्म 2019 में बंद होने के कागार पर पहुंच गया। लेकिन हार नहीं मानी। पहले वाली गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़े। आज 80 से अधिक एफ.एफ. अमेरिकन नस्ल की गाय है। दूध रखने के लिए चीलिंग

प्लांट बनाया है। पशुओं के लिए एक एकड़ में 120 फुट चौड़ाई और 130 फुट लम्बा शेड बनाया है, जिसमें पशुओं के लिए पंखे, मैट और फव्वारे लगाए हैं। दूध के ज्यादा उत्पादन के चलते नेस्ले कम्पनी ने दूध को ठंडा रखने के लिए 2300 लीटर का एक चिलिंग प्लांट भी लगाया है।

मनप्रीत सिंह ने बताया कि डेयरी फार्म का धंधा खेतीबाड़ी से अधिक व अधिक आमदनी वाला धंधा है। वह साथ-साथ अपनी 13 एकड़ खुद की ज़मीन पर रिवायती फसलों की खेती भी करते हैं और साथ-साथ डेयरी फार्म भी। उन्होंने बताया कि पशुओं के लिए चारा, फीड आदि के साथ-साथ अन्य खर्च निकाल कर 9 लाख का दूध प्रत्येक माह नेस्ले डेयरी को बेचते हैं। इससे उन्हें 35 से 40 प्रतिशत की बचत हो रही है। सर्दी के मौसम में दूध के उत्पादन के साथ प्रति माह 9 से बढ़ कर 1 लाख हो जाता है। पशुओं के गोबर से गैस प्लांट भी लगाया है।

“ प्राकृतिक कृषि के मामले में, हरित क्रांति को मदद देने के लिए जो विशाल सहायक प्रणाली निर्धारित की गई थी, उसका एक अंश भी प्रदान नहीं किया गया है। हालांकि जलवायु मसले के समाधान करने को लेकर प्राकृतिक खेती ने अपनी भूमिका और क्षमता स्पष्ट तौर पर दर्शायी है। आने वाले समय के मुताबिक इसे इसकी उचित मान्यता दी जानी बाकी है। इसी प्रकार, दूसरे उन विभिन्न एग्रो-इकोलोजिकल दृष्टिकोणों को भी यथोचित मान्यता प्रदान की जानी जरूरी है जिनका प्रदर्शन देश के अलग-अलग इलाकों में प्रगतिशील किसान कर रहे हैं। सामूहिक तौर पर, माना जा सकता है कि अब वक्त आ गया है कि नीतिगत आयोजन में नॉन-कैमिकल दृष्टिकोणों को सर्वाधिक प्राथमिकता प्रदान की जाये। ”

इस सप्ताह में दो घटनाक्रम सामने आये जिनके बारे में मुझे लगता है कि हमें मूल्यांकन करने की जरूरत है। यदि हम कड़ी जोड़ सकें, तो एक बाक्या उस आपदा का संकेत देता है जिसका इंतजार है, और दूसरा दुनिया जिस बड़े संकट का सामना कर रही है, उससे निपटने के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करता है, जिसके आने वाले वर्षों में और भी बदतर होने की संभावना है।

जबकि मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, प्रमुख गेहूं उत्पादक यूरोपीय देश फ्रांस में भारी और लगातार बारिश के कारण फसल को बड़ा नुकसान हुआ है, नीदरलैंड के एक पत्रकार ने मुझे लिखा है कि क्या मौसम में स्पष्ट परिवर्तन किसानों के लिए आर्थिक आपदा बनने जा रहा है। उसकी चिंता हॉलैंड में, जो कुछ वह देखती है, उससे पैदा होती है, जहां बारिश रुकी नहीं है, खेत पानी से लबालब हैं, परिणामस्वरूप खेतों में लगाई आलू की फसल सड़ रही है और सब्जियों के बीज उग नहीं रहे हैं।

मानवता के लिए गुलबेंकियन



खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करेंगी प्राकृतिक खेती

करते हैं। पुरस्कार के तहत 1 मिलियन युरो नकद प्रदान किये जाते हैं। बीते दिनों, रायथु साधिकार संस्था (आरवाईएसएस) के कार्यकारी हानिकारक प्रभाव पड़ा है। जबकि किसान जलवायु का प्रकोप सहन करता है, वही नीति नियंता इसको नहीं मानते या इन विनाशकारी प्रभावों को कभी-कभार की घटनाओं के रूप में लेते हैं। यह ऐसा लगता है, जैसे दीर्घकाल तक चिंता करने की कोई बात ही नहीं हो।

जबकि सतत कृषि के बारे में बातें की जाती रहीं, कृषि-पारिस्थितिकीय खेती प्रणालियों पर पिछले कुछ सालों में ध्यान गया है। यहां लगता है कि आंध्र प्रदेश में प्रोत्साहित की गयी समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती प्रणालियां विश्व में कृषि-पारिस्थितिकी की सबसे बड़ी प्रयोगशाला के रूप में सामने आयी हैं और परिणामस्वरूप सामने मौजूद बेहद हानिकारक जलवायु संकट का स्थाई समाधान प्रदान करती है। ऐसा भी महसूस होता है कि जलवायु संकट का यह जो कृषि-पारिस्थितिकीय समाधान प्रदान करता है वह उम्मीद और संकल्पों से भरपूर है। यह सही वक्त है कि क्षेत्र-विशेष की अनुकूलताओं को ध्यान में रखकर, आंध्र प्रदेश का यह मॉडल पूरे देश में लागू किया जाये। जैसा कि यह लेखक प्रायरूप कहते हैं कि जो 8 लाख किसान पूरी तरह से रासायनिक कृषि से प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की ओर रुख कर चुके हैं या करने की प्रक्रिया में हैं, वे कड़ी चुनौतियों से दो-चार होते हैं, जिन्हें प्रति वर्ष आने वाली खरीफ और रबी सीजन की रिपोर्टों में उजागर किया जा चुका है।

जब हरित क्रांति आयी, तो सघन कृषि पद्धतियों को अंजाम देने के लिए एक सुनियोजित और तय इको सिस्टम था। इसमें विश्वविद्यालयों, विशेष रिसर्च संस्थानों, कृषि विस्तार नेटवर्क, और कृषि ऋण तंत्र की स्थापना करने के साथ ही यथोचित विपणन अवसर पैदा करना शामिल था। जब भी जरूरी हुआ तो सब्सिडी व निवेश का प्रवाह भी रहा। इससे भी ज्यादा मदद के रूप में, बीज विकास संरचना का सृजन और उर्वरक संयंत्र और लेखक कृषि एवं खाद्य विशेषज्ञ हैं।

एपीसीएनएफ को दुनिया भर से प्राप्त 181 नामांकनों में से चुना गया था।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि उत्तरी अमेरिका में मैक्रिस्को से लेकर एशिया में फिलीपींस तक, और अमेरिका के

टेक्सास से लेकर भारत में महाराष्ट्र तक- दुनिया के विभिन्न भागों में कृषि कड़ी जलवायु प्रभावों से दो-चार है। विगत में भी, कुछ भागों में अतिवृष्टि, बाढ़, भयंकर तूफानों व चक्रवातों की बढ़ती तादाद से कृषि को नुकसान पहुंचता रहा है तो विभिन्न अन्य क्षेत्रों में लंबे समय तक सूखा और भीषण अकाल जैसी

इस बीच भारत अभूतपूर्व गर्मी की चेपेट में है। जैसे-जैसे सामान्य तापमान बढ़ता जा रहा है, आशंकाएं हैं कि क्या देश आने वाले वर्षों में अपनी खाद्य सुरक्षा जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होगा? कुछ वर्ष पहले गेहूं की कटाई के दौरान गर्मी ने कहर ढहाया था। उसके एक साल बाद, मानसून के मौसम

प्रतिष्ठित पुरस्कार इस बार दो अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्राप्तकर्ताओं के साथ ही आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती यानी एपीसीएमएनएफ को प्रदान किया गया है। दरअसल, यह पुरस्कार उन जलवायु कार्यों और जलवायु समाधानों में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है जो उम्मीद और संभावनाओं को प्रेरित

करता है। जैसे-जैसे सामान्य

तापमान बढ़ता जा रहा है, आशंकाएं

हैं कि क्या देश आने वाले वर्षों में

अपनी खाद्य सुरक्षा जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होगा?

कुछ वर्ष पहले गेहूं की कटाई के दौरान गर्मी ने कहर ढहाया था। उसके एक साल बाद, मानसून के मौसम

तीसरी पारी शुरू होते ही नई सरकार कह रही है कि देश में जितना आर्थिक विकास उनके शासनकाल में हुआ, उतना उनकी पूर्ववर्ती सरकारों ने नहीं किया। अब देश को नई पहचान देने का प्रयास हो रहा है। मोदी शासन का पहला आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत होने से पहले देश के प्रमुख

सुरेश सेठ

अर्थशास्त्रियों की राय ली जा रही है ताकि ये आर्थिक लाभ कतार में खड़े आखिरी आदमी तक पहुंच सके। अर्थशास्त्रियों से यह राय ली जा रही है कि देश में गरीबी कैसे कम होगी। अमीर-गरीब का भेद कैसे कम होगा। देश की पिछड़ती हुई कृषि में नई जान कैसे डाली जाएगी।

कृषि आज भी देश का महत्वपूर्ण व्यवसाय है और इस क्षेत्र में आबादी का 50 प्रतिशत संलग्न है। प्रश्न यह है कि कृषि का योगदान सकल घरेलू आय में क्यों घटता जा रहा है? वर्तमान में, यह सकल आय के आधे हिस्से से घटकर केवल 15 प्रतिशत का रह गया है। छोटे किसान निराशा, बदहाली और पिछड़ेपन के गर्त में हैं। गरीबी को दूर करने के लिए सिर्फ परिभाषाएं बदलना पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है कि जनता के जीवन स्तर में सुधार हो और उनकी मूलभूत जरूरतें पूरी हों।

मोदी सरकार अपनी तीसरी पारी का पहला बजट संसद में पेश करने जा रही है। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का यह सातवां बजट है। हालांकि, नई राह पर चलने का दावा करने वाले आर्थिक विशेषज्ञों के सामने अभी कई प्रश्न हैं, जिन पर विचार करना आवश्यक है। यदि सरकार अपने पहले कदमों के रूप में इनकी घोषणा कर सके तो बेहतर होगा।



तीसरी पारी का बजट

समाज के अंतिम व्यक्ति को मिले विकास का लाभ

एक समतावादी समाज की स्थापना संविधान का महत्वपूर्ण लक्ष्य रहा है, लेकिन जब निजी क्षेत्र को प्राधान्य मिलने लगा, तो निजी और सार्वजनिक भागीदारी के नाम पर धन का असमान वितरण और बढ़ गया। गरीब और गरीब होते गए, जबकि अमीरों की आर्थिक समर्थ्य लगातार बढ़ती रही।

यह कैसा विरोधाभास है जबकि दुनिया में भारत आर्थिक ताकत के रूप में मजबूत होता जा रहा है और यहां करोड़ों गरीब बदहाल हैं। अनियमित रोजगार है। बेरोजगार युवा स्थायी रोजगार न

मिलने के कारण विदेशों की ओर पलायन कर रहा है या नशे की गर्त में डूब रहा है। इस समय सरकार के सामने सवाल यह है कि किसी मध्यम और कमज़ोर वर्ग को कैसे राहत दी जाए? इस समय जो विकास हो रहा है, वह मुख्यतः निवेशकों के प्रयासों से है। यह विकास निजी क्षेत्र के डिजिटल, रोबोट युग के आगमन और कृत्रिम मेथा के कारण है। इसके बावजूद, देश के आम आदमी की बेरोजगारी की समस्या हल नहीं हो रही है। आंकड़े बताते हैं कि शहरों की तुलना में गांवों में बेरोजगारी बढ़ने लगी है। इसका कारण यह है कि हमने फसलें उगाने के बाद अपने खाद्य पदार्थों को फिनिश प्रोसेसिंग में नहीं डाला, जैसा कि सभी प्रगतिशील देश इस समय कर रहे हैं। अगर यह प्रसंस्करण उद्योग लघु और कुटीर उद्योगों के रूप में गांवों के आसपास स्थापित हो जाते, तो आज किसानों में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या पैदा न होती। वैसे लघु और कुटीर उद्योगों का प्रशस्तिगायन हर बजट में किया जाता है। मोदी सरकार की तीसरी पारी के इस पहले बजट में भी इसकी प्रशंसा की जा रही है, लेकिन

वास्तविकता में इसका प्रभाव कहीं नज़र नहीं आ रहा है। लघु और कुटीर उद्योगों में रोजगार देने की बहुत क्षमता है। हालांकि, न तो छोटे उद्यमियों, छोटे निवेशकों, या नौजवानों ने इस दिशा में ध्यान दिया है। इसके विपरीत, हाल के दिनों में लाल डोरा क्षेत्र, जहां ये उद्योग विकसित किए जा सकते थे, वहां संपन्न निवेशकों को भी निवेश करने की इजाजत दे दी गई। किसानों की आय दोगुनी करने के बाद के बाद भी किसानों को उनकी मेहनत का पूरा मूल्य नहीं मिल रहा है। उनकी फसलों के लिए नियमित न्यूनतम समर्थन मूल्य एक कानूनी अनिवार्यता के रूप में सामने नहीं आ रहा है।

इस समय महंगाई का बड़ा कारण पेट्रोल और डीजल की कीमतें हैं। इनकी कीमतों को जीएसटी के तहत लाने की मांग की जा रही है। जबकि पेट्रोलियम कम्पनियों को भारी लाभ होने के बावजूद कीमतें घटाई नहीं जा रही हैं। इस समय देश की जरूरत का 85 प्रतिशत कच्चा तेल विदेशों से आयात किया जाता है जो देश की विनियम दरों और रुपये के मूल्य को निरंतर घटाता है। आयात महगे हो जाते हैं और नियात सस्ते। जाहिर है कि महंगाई के कारण रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति में भी यथास्थितिवाद का बोलबाला है। रेपो रेट में पिछली सात-आठ घोषणाओं में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। जब तक ब्याज दर कम न होगी, नए निवेश को प्रोत्साहन कैसे मिलेगा?

सरकार को अपनी तीसरी पारी शुरू करते हुए इन समस्याओं पर गंभीरता से विचार करना होगा। यह सुनिश्चित करना होगा है कि आर्थिक विकास की उपलब्धियां केवल कागजी न रहकर, जमीनी स्तर पर लागू हों और समाज के हर वर्ग तक पहुंच सकें। लेखक साहित्यकार हैं।

सेहत के लिए फायदेमंद है 'मिलेट्स' का उपयोग

50 साल पहले तक भारत में मिलेट्स जैसे बाजार, ज्वार, रागी, कोदो, कुट्टीकी आदि प्रमुख अनाज थे। लेकिन समय के साथ इनका महत्व खो गया और भारतीयों ने पश्चिमी देशों से प्रभावित होकर मिलेट्स को मोटे अनाजों और खासतौर पर ग्रामीण खाने के रूप में देखना शुरू कर दिया। जिस कारण इनकी खेती में भी कमी आई और साथ ही

आते हैं और समा, कोदो, चिन्ना इत्यादि को मोटे मिलेट्स माना जाता है।

हर एक मिलेट्स का अपना महत्व है। जैसे कि बाजार कैल्शियम से भरा होता है, ज्वार में पोटाशियम और फास्फोरस होता है और कंगनी में फाइबर होता है, जबकि कोदो आयरन से भरपूर होता है। इसलिए हमें सभी तरह के मिलेट्स खाते रहना चाहिए।

'सुपरफूड' और 'स्मार्टफूड' है मिलेट्स : कम पानी, उर्वरक और कौटनाशकों के साथ कम उपजाऊ मिट्टी में भी मिलेट्स को उगाया जा सकता है। उच्च तापमान में भी ये अच्छा ग्रो करते हैं और इसी कारण इन्हें 'क्लाइमेट स्मार्ट अनाज' कहा जाता है।

'मिलेट्स' सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं। मिलेट्स में प्रोटीन, फाइबर, बी-विटामिन, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीज, मैग्नीशियम, फास्फोरस, ज़िंक, पोटाशियम, कॉपर और सेलेनियम सहित बहुत से पोषक तत्व होते हैं। मिलेट्स एंटीऑक्सीडेंट, फ्लेवोनोइड्स, एंथोसायनिन, सैयोनिन और लिग्नन्स का एक पावरहाउस भी है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद है, इसलिए इन्हें सुपरफूड कहा जाता है।

सेहत के लिए हैं फायदेमंद

1. ब्लड ग्लुकोज लेवल को मेनेटेन करते हैं : मिलेट्स, गेहूं और मक्का की

तुलना में, पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और ग्लूटन फ्री भी होते हैं। इनका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। इनमें उच्च मात्रा में डाइट्री फाइबर सभी आवश्यक अमीनो एसिड, विटामिन और मिनरल्स के साथ प्रोटीन भी होता है और इसके कारण ये ब्लड ग्लुकोज लेवल को मेटेन करते हैं।

2. वज़न घटाने में मदद : मिलेट्स खाने से वज़न नियंत्रित रहता है। इसे कम करने में सहायता मिलती है। जैसे बाजरे का आटा नियमित आहा में शामिल करना या नाश्ते के लिए मिलेट्स को शामिल करने से मोटे लोग अपनी बी.एम.आई. (BMI) को कम कर सकते हैं।

3. दिल के लिए अच्छे हैं मिलेट्स : 'मिलेट्स' एंटीऑक्सीडेंट का अच्छा स्त्रोत है, जिसमें बीटा-ग्लूकोस, फ्लेवोनोइड्स, एंथोसायनिड्स, टैनिन, लिग्नन्स और पॉलिकोसैनोल शामिल हैं। ये एंटीऑक्सीडेंट एल.डी.एल. कॉलेस्ट्रॉल को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और आर्टरीज़ को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं।

4. कैंसर सेल्स से करते हैं फाइट : फॉक्सटेल और प्रोसो वैरायों के मिलेट्स कैंसर सेल्स के विकास को रोकने में प्रभावी साबित हुए हैं। मिलेट्स में फाइटोकेमिकल्स सामान्य कोशिकाओं को कोई नुकसान पहुंचाए बिना कोलन, ब्रेस्ट और लिंवर में कैंसर सेल्स के निर्माण को कम करते हैं।

5. अच्छा होता है डाइजेशन (पाचन) : मिलेट्स में अच्छी मात्रा में डाइट्री फाइबर होने से डाइजेस्टिव सिस्टम अच्छा रहता है। इससे कब्ज़, पेट फूलना, सूजन, ऐठन जैसी परेशानियां कम से कम होती हैं। लिंवर और किंडनी जैसे अन्य महत्वपूर्ण अंगों के स्वास्थ्य में सुधार होता है और इम्यूनिटी सिस्टम मजबूत होता है।



वास्तव में छोटे बीज वाली घासों का एक समूह है, जो व्यापक रूप से दुनिया भर में अनाज फसलों या मानव भोजन के लिए अनाज और चारे के रूप में उगाया जाता है। भारत में, कुछ सबसे पुराने यजुर्वेद ग्रंथों में इनका उल्लेख किया गया है।

मिलेट्स के प्रकार : ICRISAT की एक रिपोर्ट के मुताबिक, मिलेट्स की दो प्रमुख श्रेणियां हैं : मेजर या मुख्य मिलेट्स और माइनर या छोटे मिलेट्स। बाजरा, ज्वार, रागी और कंगनी मुख्य मिलेट्स की श्रेणी में

ग्रीष्म ऋतु में बीजों को एक रात पानी में भिगो कर बोते हैं। अच्छी नमी वाले खेत में हल के पीछे बुवाई कर सकते हैं। गर्मी की फसल को मेड़ों पर बोना अच्छा होता है। बीज वाली फसल के लिए 200 मीटर की अलगाव दूरी रखनी चाहिए।

उन्नतशील प्रजातियां :

वर्षा उपहार : यह प्रजाति यलो बेन मौजेक विषाणु रोग रोधी है। पौधे मध्यम ऊंचाई वाले (90-120 सेटीमीटर) तथा इनके इंटर नोड पास-पास होते हैं। पौधों में 2-3 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा, निचली पत्तियां चौड़ी तथा छोटे-छोटे लोब्स वाली एवं ऊपरी पत्तियां बड़ी लोब्स वाली होती हैं। वर्षा ऋतु में 40 दिनों में फूल निकलने शुरू हो जाते हैं तथा फल 7 दिनों बाद तोड़े जा सकते हैं। फल चौथी-पांचवीं गांठों से पैदा होते हैं। औसत पैदावार 9-10 टन प्रति हैक्टेयर होती है। इसकी खेती ग्रीष्म ऋतु में भी कर सकते हैं। इसकी जाति को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने विकसित किया है। इसे पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में उगाने की संस्कृति की जाती है।

पूसा ए-4 : यह प्रजाति भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलो बेन मौजेक विषाणु रोग रोधी है। यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है। इसके फल गहरे हरे तथा 12-15 सेटीमीटर लम्बे होते हैं। पहली तुड़ाई 45 दिनों बाद शुरू हो जाती है। औसत पैदावार 12-15 टन प्रति हैक्टेयर होती है। यह प्रजाति वर्षा तथा गर्मियों दोनों समय में उगाई जाती है।

अर्का अनामिका : यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैलोर द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलो बेन मौजेक विषाणु रोग रोधी है। इसके पौधे ऊंचे (120-150 सेटीमीटर) सीधे तथा अच्छी शाखा युक्त होते हैं। फल 20 सेटीमीटर लम्बे तथा मध्यम आकार के होते हैं। फल रोम रहित, मुलायम, गहरे हरे तथा 5-6 धारियों वाले होते हैं। यह प्रजाति दोनों ऋतुओं में उगाई जा सकती है। पैदावार 12-15 टन प्रति हैक्टेयर हो जाती है। यह प्रजाति उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में अच्छी पैदावार देती है।

अर्का अभय : यह प्रजाति येलो बेन मौजेक विषाणु रोग रोधी है। इसके पौधे ऊंचे 120-150 सेटीमीटर सीधे तथा अच्छी शाखा युक्त होते हैं।

हिसार उन्नत : पौधे मध्यम ऊंचाई 90-120 सेटीमीटर वाले तथा इंटर-नोड पास-पास होते हैं। पौधों में 3-4 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग हरा होता है। पहली तुड़ाई 46-47 दिनों बाद शुरू हो जाती है। औसत पैदावार 12-13 टन प्रति हैक्टेयर होती है। फल 15-16 सेटीमीटर लम्बे, हरे तथा आकर्षक होते हैं। यह प्रजाति वर्षा तथा गर्मियों दोनों समय में उगाई जाती है।

बी.आर.ओ. : यह प्रजाति पीत शिरा मौजेक एवं प्रारंभिक पत्ती मोड़ विषाणु से पूर्णतया अवरोधी है। इसमें फूल 38 से 40 दिनों में चौथे से छठवें गांठ पर आ जाते हैं। इसकी पैदावार गर्मी के दिनों में 135 किंवंटल तथा बरसात की फसल में 180 किंवंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

पूसा सावनी : यह गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली किस्म है। इसके पौधे लम्बे, तने व पत्तों के डंठल पर बैगनी रंग के धब्बे होते हैं। फल 6 से 7 गांठ पर लगने शुरू हो जाते हैं। फल हरे तथा चिकने होते हैं। यह



भिंडी की वैज्ञानिक खेती

डॉ. प्रमोद कुमार (बागवानी विशेषज्ञ) एवं श्रीमती राजकुमारी (गृह वैज्ञानिक),
कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुरा-रेवाड़ी

किस्म 50 दिनों में फल देना शुरू कर देती है। औसत पैदावार तथा ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए क्रमशः 70 तथा 75 किंवंटल प्रति हैक्टेयर है।

एच.बी.एच.-142 : यह एक संकर किस्म है। पीलीया रोग रोधी क्षमता होने के कारण यह वर्षा ऋतु में उगाए जाने के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे दो गांठों के बीच की कम दूरी व मध्यम लम्बाई के होते हैं। इसकी पत्तियां हस्ताक्षर कटी हुई व हरे रंग की होती हैं। इसके फल 8-10 सेटीमीटर लम्बे, मध्यम मोटाई व पांच कोर युक्त आकर्षित होते हैं तथा तीसरी व चौथी गांठ से लगने शुरू होते हैं। यह किस्म 47-48 दिन में फल देना शुरू करती है। इसकी औसतन पैदावार 130 किंवंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

हिसार नवीन : यह किस्म पीलिया रोग रोधी होने के कारण वर्षा ऋतु में उगाए जाने के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे 3-4 शाखा युक्त व दो गांठों के बीच की दूरी कम रखने वाले होते हैं। इसके फल हरे, आकर्षित, पांच कोरें युक्त मध्यम लम्बाई व मोटाई वाले होते हैं। यह किस्म बोने के 46-47 दिन उपरांत फल देना आरम्भ कर देती है। इसकी औसत उपज 100-115 किंवंटल प्रति हैक्टेयर है।

परमनी क्रांति : फल पूसा सावनी जैसे ही होते हैं। औसत उपज 100-125 किंवंटल प्रति हैक्टेयर है। पीतसिरा अवरोधी किस्म है।

अन्य किस्में : पंजाब पद्मिनी, संकर गंगा, को-3

बुवाई का समय :

1. उत्तर भारत : फरवरी और जुलाई माह।

2. पूर्वी व दक्षिणी भारत : संपूर्ण वर्ष (प्रत्येक माह में)

बीज की मात्रा :

1. 7-10 किलो प्रति हैक्टेयर (वर्ष ऋतु में)
2. 12-15 किलो प्रति हैक्टेयर (ग्रीष्म ऋतु में)

खाद एवं उर्वरक :

* 50 टन गोबर की सड़ी खाद खेत की तैयारी के समय।

* 125 किलोग्राम कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट, 200 किलोग्राम सुपर फास्फेट तथा 50 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश खेत की अंतिम तैयारी के समय।

* 125 किलोग्राम कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट को दो बार में पहली बार बुवाई के एक माह बाद तथा दूसरी बार फल आते समय।

कर छिड़काव करें।

जैसिड : इस कीट के नियंत्रण के लिए बुवाई के समय फोरेट (10जी) 10 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिला देना चाहिए। क्लोरोपायरीफॉस 2 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से बीज उपचार 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीज बनाने वाली फसल में देना उचित है। नीम युक्त कीटनाशी से बीज उपचार 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीज बनाने वाली फसल में देना उचित है। नीम युक्त कीटनाशी अंसाडिरैक्टीन 1500 पी.पी.एम. का 4 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से पानी में मिला कर छिड़काव करें।

तना एवं फल छेदक कीट : इस कीट से फसल बचाने के लिए कीट-पतंगों को आकर्षित करने के लिए फेरोमोन ट्रैप्स (इरविट ल्यूर एवं हेलील्यूर) का इस्तेमाल पौधों में फूल आते समय करें। कीटों द्वारा फैलाने वाले वायरस अर्थात् विषाणु बीमारी के नियंत्रण के लिए एन.पी.वी. को 250 एल.ई. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। इसके अलावा क्लोरोपायरीफॉस 35 ई.सी. 2 मिलीलीटर प्रति लीटर या साइपरमेश्विन (10 ई.सी.) 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करने से कीटों का नियंत्रण होता है।

सावधानियां :

* दवा छिड़कने से पहले फलों की तुड़ाई करें।

* छिड़काव के बाद 10-15 दिनों तक फलों का सञ्जीवी के लिए उपयोग ना करें।

तुड़ाई : हर तीसरे दिन मुलायम फलों को तोड़ते रहना चाहिए, क्योंकि कड़ा होने पर उसमें रेशे की मात्रा बढ़ जाती है। फूल खिलने के 5 से 7 दिन बाद फल तोड़ने लायक हो जाते हैं। बीज के लिए फल पूर्ण तैयार होकर फटने लगें, तब तुड़ाई कर। फलों को पूरी तरह सुखा कर बीज निकालें। अच्छे गुणवत्ता वाले बीज में अंकुरण क्षमता कम से कम 65 प्रतिशत होनी चाहिए।

बीजोत्पादन :

दूरी : 60 सेटीमीटर × 45 सेटीमीटर

अलगाव दूरी : भिंडी में पर-परागण होता है। अतः जब दो जातियों का बीज पैदा करना हो तो उनके बीच में कम से कम दूरी 200 मीटर की दूरी होनी चाहिए।

खराब पौधों की छंटाई : रोग ग्रसित एवं उन पौधों को जो उस जाति से भिन्न दिखाई पड़ें, जिसका बीज बनाया जा रहा है, फूल आने से पहले ही निकाल देना चाहिए। फलों के आकार और रंग के आधार पर



छंटाई करनी चाहिए। पीतसिरा मौजेक पौधों को निकाल कर खत्म कर देना चाहिए।

कटाई एवं बीज की सफाई :

जब फली का रंग भूंग हो जाए, तो तुड़ाई करनी चाहिए। फली को धूप में अच्छी तरह पूरा सुखा कर फली को हाथ से तोड़ कर या लकड़ी से पीट कर बीज निकालना चाहिए।

पहले तीन फल हरे तोड़ने चाहिए, जिससे अधिक फल आएं। आखिर के 2-3 फलों का भी बीज नहीं लेना चाहिए। 3 से लेकर 8वें इंटरकोड पर लगे फलों से अधिक बीज की गुणवत्ता भी अच्छी आती है। कीटों से ग्रसित फलों का बीज भी नहीं लेना चाहिए।

उपज : 10-12 किंवंटल बीज प्रति हैक्टेयर।

सर्दियों में खिलते हैं यह फूल, अच्छे मिलते हैं दाम

हिमाचल प्रदेश में बबूना की खेती से लगेंगे आर्थिकी को पंख

बबूना सर्दियों में लगने वाला एक मौसमी फूल है, जिसकी व्यवसायिक खेती आजकल काफी प्रचलित हो रही है। हिमाचल प्रदेश में मालाएं इत्यादि अलंकार बनाने के लिए, खुले फूल जो फरवरी से अप्रैल के बीच खिलें, बबूना के अलावा उपलब्ध ही हैं। बबूना या एनुअल क्राइसेथेमम एक आसानी से लगने वाला फूल है। बबूना का वैज्ञानिक नाम 'क्राइसेथेमम कोरानिरियम' है, जो अब बदल कर 'ग्लोबियोनिस कोरानिरियम' हो गया है। नागपुर क्षेत्र में इसे 'बिजली', पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में 'बबूना' तथा उत्तर प्रदेश में 'गेंदी' के नाम से जाना जाता है। एनुअल क्राइसेथेमम को 'गारलैड क्राइसेथेमम' अथवा 'क्राइन डेज़ी' या 'एडिबल क्राइसेथेमम' भी कहा जाता है। एनुअल क्राइसेथेमम



की कुछ अन्य स्पीशीज जैसे कलर क्राइसेथेमम तथा 'क्राइसेथेमम मल्टिकलर' (येलो डेज़ी) को प्रायः क्यारियों की सजावट के लिए उपयोग क्यारियों की सजावट के लिए उपयोग में लाया जाता है। फूलों का उपयोग

आम तौर पर माला, बेणी बनाने के लिए किया जाता है और सामाजिक एवं धार्मिक समारोहों के दौरान फूलों की सजावट में भी उपयोग किया जाता है। त्यौहारों तथा समारोहों के दिनों में, पूजा और सजावट के लिए साल भर इन फूलों की निरंतर मांग रहती है। बबूना के पौधे शाकीय, कटी पत्तियों वाले तथा बड़े (60-70 सेटीमीटर) होते हैं। जिन पर पीले, सफेद तथा पीले-सफेद सिंगल या डबल फूल आते हैं।

आसान है बबूना की खेती : वैज्ञानिक

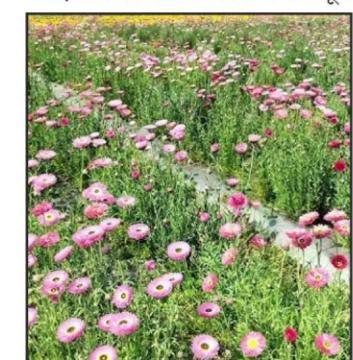
डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी के पुष्पोत्पादन एवं भू-सौदर्य वास्तुकला विभाग की वैज्ञानिक डॉ. भारती कश्यप, डॉ. शिवानी ठाकुर एवं डॉ. एस.आर. धीमान ने इस पर कार्य किया ताकि पुष्प उत्पादकों की आर्थिकी भी मजबूत हो। बबूना की खेती काफी सरल है तथा यह उन क्षेत्रों में भी आसानी से की जा सकती है, जहां भूमि की उर्वरता कम है एवं पानी की कमी है।

3 माह में आने लग जाते हैं फूल

पौधों को अच्छे से तैयार करके एक मीटर चौड़ाई की क्यारियों में 30 से 35 सेटीमीटर की दूरी पर लगाना चाहिए। खेत की तैयारी करते समय 5 किलोग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से गोबर की खाद मिला दें। रोपाई के लगभग 20-25 दिन बाद पौधे का शीर्षनोचल करें ताकि पौधे में अधिक शाखाएं एवं फूल आएं। बबूना को लगाने के लगभग तीन महीने के अंदर ही फूल आने शुरू हो जाते हैं। प्रत्येक पौधे पर लगभग 100-150 फूल लगते हैं। प्रति वर्ग मीटर 2.5-3.5 किलो फूल प्राप्त हो जाते हैं तथा लगभग एक बीघे से 14-21 क्लिंबल फूल प्राप्त किए जा सकते हैं। फूलों को बिना डंडी के तोड़ कर गते की अंदर से अखबार लगी पेटियों में डालकर विपणन के लिए मंडी में भेजा जाता है।

ये मिलते हैं दाम

किसान को 35 रुपए से 100 रुपए प्रति किलो के हिसाब से फूल



के दाम प्राप्त हो जाते हैं। बबूना का बीज भी किसान स्वयं बना सकता है, लेकिन उसके लिए एक ही किस्म को खेत में लगाया पड़ेगा। फूलों की पत्तियों के झाड़ने के लगभग 40 दिन बाद फूलों का बीज पक जाता है, जिसे फिर फुनगी सहित काट कर पॉलीथीन शीट पर डाल कर सुखा लिया जाता है। यह बीज का मूल्य 8000 से 10000 रुपए प्रति किलो होता है।

EICHER TRACTORS



पावर | परफॉरमेंस | स्टाइल एक साथ

TAFE CORPORATE COMMUNICATIONS

